Vol 5 Issue 5 Feb 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review of Research
International Online Multidisciplinary Journal

ISSN: 2249-894X   Impact Factor : 3.1402(UIF)   Volume - 5 | Issue - 5 | Feb - 2016

प्राचीन भारत में जैन शिक्षा पध्दति

लीना संचेती[१] , साध्वी प्रतिभाजी ‘प्राची’[२]
[१]शोधछात्रा
[२]टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे.

प्रस्तावना

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में ज्ञान का सर्वाधिक महत्व रहा है। मानवी जीवन की सफलता मनुष्य के ज्ञान पर अवलंबीत होती है। ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक तथ्यों से ज्ञात होता है कि भारत में प्राचीनकाल से ही ब्राम्हण और श्रमण विचारधाराओं का समानान्तर विकास होता रहा है। श्रमण परम्परा की धारा तीर्थंकर ऋषभ से लेकर वर्द्धमान महावीर के उदय तक अविच्छिल रूप से चली आयी। एक नई इकाई के रूप में गौतम बुद्ध द्वारा बौद्धधर्म के स्थापना साथ श्रमण परम्परा में एक कड़ी जुड गई।

शिक्षा याने मनुष्य द्वारा प्राप्त ज्ञान को एक पीढी से दूसरी पीढी तक पहुंचाने के लिए जिस विधि या प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है। भारत देश में प्राचीन का से ही एक अत्यंत सुव्यवस्थित आदर्श शिक्षा पद्धति रही होगी। शिक्षा के क्षेत्र में जैन चिन्तकों ने भी बेजोड विकास किया। विभिन्न बौद्धिक स्तरों को ध्यान में रखते हुए जैन गुरूओं ने एकमात्र मानव जीवन का समग्र विकास इस उद्देश्य से शिक्षा विधियों का क्रम निर्धारीत किया। शिक्षा का माध्यम लोकभाषा होने से उनके उद्देश्य की पूर्ति सहजता से हुई। आध्यात्मिक तथा लौकिक शिक्षा के रूप में वर्गीकरण किया गया। आध्यात्मिक के अन्तर्गत जीव तथा अजीव का समग्र अध्ययन तथा लौकिक शिक्षा के अन्तर्गत बहत्तर कलाओं का समावेश किया गया।

डॉ. राधाकुमुद मुकर्जी ने अपनी पुस्तक ‘‘एडुकेशन इन एन्शिएण्ड इण्डिया’’ में लिखा है भारत में शिक्षा तथा विज्ञान की खोज केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए नही हुई है किन्तु धर्म के मार्ग पर चलकर मोक्ष प्राप्त करने का क्रमिक प्रयास माना गया। मोक्ष ही जीवन का चरम विकास था जो धर्म के मार्ग पर चलकर अपने गन्तव्य की ओर अग्रसर होता रहा।

प्राचीन भारत में शिक्षा की दो पद्धतियाँ प्रचलित थी उनमे -

१)वैदिक या ब्राह्मण शिक्षा पद्धति
२)श्रमण या जैन शिक्षा पद्धति

दोनो शिक्षा पद्धीतयों में कुछ समानताओं के साथ साथ कुछ मौलिक भेद भी थे, जिनके कारण दोनों का स्वतन्त्र रूप से विकास होता रहा। वैदिक काल में तीन प्रकार की शिक्षण संस्थाओं की चर्चा प्राचीन साहित्य में मिलती है।

१)आश्रम
२)परिषद
३)संम्मेलन

किन्तु शिक्षा का केन्द्रबिन्दु ऋषियों के आश्रम होते थे। जो अवासिक विद्यालय और विश्वविद्यालयों की तरह थे। वसिष्ठ, कण्व, व्यास, भारद्वाज, परशुराम, शौनक आदि आचार्यों के आश्रम शिक्षा के सुप्रसिध्द केन्द्र थे जिनकी चर्चा हमें वैदिकोत्तर काल के साहित्य में मिलती है। आश्रम, ग्राम और नगरों से दूर अख्यों में होते थे। आवास और अध्ययन के साथ भोजन की भी सम्पूर्ण व्यवस्था वहाँ हो जाती थी। पर्णकुटी के रूप में छात्रावास, भोजनके रूप में धान्य, कन्दमूल, फल, पुष्प और पत्र होते थे। समग्र शिक्षा के कुलगुरू ऋषि ही होते थे१। उपनयन संस्कार के अनन्तर वेदारम्भ संस्कार होता था। विद्यार्थी के लिए ब्रम्हचर्य व्रत अनिवार्य था। ब्राम्हण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों को ब्रम्हचारी

अथवा विद्यार्थी होने के अधिकार था। पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' में उत्तर वैदिक काल के शिक्षा के स्वरूप का परिचय मिलता है।

ऋषि द्रष्टा होते थे। शिक्षा का माध्यम उपदेश था। स्मृतिपटल पर उपदेश अंकित किया जाता था। इसलिए वे ज्ञानकोश 'श्रृति' थे पुस्तक नहीं थे। लेखनकला के अस्तित्व में आने से पूर्व, मूलपाठ को अक्षुण्णा रखने के लिए उच्चारण पद्धति का पठन और कण्ठस्थ रखने का जो वैज्ञानिक ढंग था वो आज भी वैसा ही बनाये रखा है उदा. संहिता पाठ, पद-पाठ, क्रम-पाठ, जटा-पाठ और धन-पाठ के रूप में वेदों का पठन२।

जैन शिक्षा पद्धति की विशेषता -

जैन शिक्षा पद्धति वैदिक शिक्षा पद्धति से कई बातों में भिन्न है। जैन धर्म में देव, गुरू और शास्त्र का समान महत्व है। पाँच परमेष्ठियों में अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु की गणना की जाती है। अरिहन्त और सिद्ध सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और सम्पूर्ण दोषों से रहित होते है। गुरूओं के क्रम में आचार्य, उपाध्याय और साधु की गणना की जाती है। जैन धर्म में साधु आचार का पालन करनेवाले इन तीनों गुरूओं में मुख्य रूप से शिक्षा देने का कार्य उपाध्याय का बताया गया है ३।

जैन साधु आचार के अन्तर्गत वर्षाकाल के चार माह के अतिरिक्त साधु एक स्थान पर स्थिर होकर नही रहता। वह विभिन्न ग्राम, नगरों में पदयात्रा करता हु। अपनी साधना करता हुआ तत्वोपदेश देता है ४। आचरण के इस नियम के कारण जैन शिक्षा के वैसे केन्द्र नही बने जैसे वैदिक ऋषियों के आश्रम होते। इसके विपरित जहाँ साधु संस्था का चार्तुमास होता था वे ही अस्थायी रूप शिक्षा के केन्द्र बन जाते थे। किन्तु कुछ ऐसे केन्द्र भी थे जहाँ साधु संस्था के कतिपय मुनि विद्यमान रहते थे। ऐसे केन्द्रों मे पाटलीपुत्र, मथुरा, श्रावस्थी, वल्लभी, गिरिनगर, श्रवणबेळगोळ, खण्डगिरि, उदयगिरि, शितन्नवासल, राजगृह आदि प्रमुख केन्द्र थे ५। मन्दिर वास्तु का विकास होने के बाद जैन अध्ययन केन्द्रों का विकास होता गया। प्रत्येक मन्दिर के साथ शास्त्र भण्डार और स्वाध्यायशाला तथा गुरू आवास की भी व्यवस्था हुआ करती थी।

आध्यात्मिक पृष्टभूमि होने के बावजूद भी जैन शिक्षा पद्धति व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को प्रभावित करती थी ६। आठ वर्ष के उम्र में ही बालकों को शिक्षा हेतु कलाचार्यो के पास भेजने की प्रमाण मिलता है ७। समय समय पर शिक्षकों को राजा-महाराजा तथा कुलीन व्यक्ति अनुदान एवं पारितोषिक दिया करते थे ८। परस्पर वैचारिक आदान प्रदान द्वारा पिता भी अपने पुत्रों को पेशे में निष्णात बनाते थे ९। स्त्री-शिक्षा के संदर्भ में कलाचार्य के पास जाने या भेजने के कोई उल्लेख नही मिलते है। किन्तु सम्पन्न घरों की कन्याओं को घर पर ही उनके माता-पिता कोई व्यवस्था करते थे। विवाह होने तक अथवा विवाहोपरान्त प्रवज्या ग्रहण कर अध्ययन को जारी रखा जाता था जबकि दूसरा वर्ग आजीवन अविवाहित रहकर विद्याध्ययन करता था १०। इस प्रकार समाज में लिंगभेद के कारण शिक्षा-प्राप्ती कोई रोक नही थी।

राजप्रश्नीय सूत्र में आचार्यों की तीन कोटियाँ बताई है कलाचार्य, शिल्पाचार्य और धर्माचार्य ११। उत्तराध्ययन सूत्र में गुरू और शिष्य के मध्य सम्बन्धों का मार्मिक चित्रण किया गया है। कलाओं को ग्रहण करने के पश्चात् जब बालक घर लौटता था तब माता-पिता प्रसन्न होकर कलाचार्य का विपुल वस्त्र, गन्ध, माला और अलंकारो से सत्कार सम्मान करके विपुल प्रीतिदान देकर विदा करते थे १२।

जैन शिक्षा पद्धति, माध्यम, विषय तथा विधि.

जैन शिक्षा पद्धति - आचार्य और अध्येता की दृष्टि से जैन शिक्षा पद्धति में भिन्नता थी। जैन आचार्य शिष्य के पास से कोई अपेक्षा या आकांक्षा नही रखता था। जबकि वैदिक शिक्षा पद्धति में शिष्य गुरू के यज्ञ पूजा इत्यादि के लिए सामग्री और समिधाएँ आदि जुटाता था।

माध्यम - शिक्षा के माध्यम के विषय में जैन शिक्षा पद्धति और वैदिक शिक्षा पद्धति लगभग समान रही है। दोनों में भी शिक्षा का माध्यम उपदेश ही था तथा शिक्षा पद्धति भी उपदेशमूलक थी।

विषय - जैन शिक्षा के विषय लगभग समान ही रहे है अर्थात जिस प्रकार वैदिक युग में सम्पूर्ण जीव और जगत के विषय में जानकारी देना उद्देश्य रहा उसी प्रकार जैन शिक्षा पद्धति में थी। अन्तर यह है की वैदिक गुरू इहलौकिक जीवन के लिए प्रवृत्तिमूलक शिक्षा देता था उस प्रकार जैन आचार्य नही। उनका उपदेश निवृत्तिपरक होता था।

आदिपुराणमें शिक्षा के विषय शिक्षार्थियों के बौद्धिक विकास पर अवलंबीत थे, पाँच वर्ष के बालक-बालिकाओं को लिपिज्ञान, अंकज्ञान एवं सामान्य भाषाविज्ञान कराया जाता था। आठ वर्ष की अवस्था तक बालक घरपर ही रहकर लिखना, पढना तथा हिसाब जानना सिखता था। आठ वर्ष के आयु के पश्चात् शास्त्रीय शिक्षा प्रारम्भ होती थी। आदिपुराण में आदि तीर्थंकर ऋषभदेव ने अपने पुत्र एवं पुत्रियों अनेक प्रकार की शिक्षा दी। ज्येष्ठ पुत्र भरत को अर्थशास्त्र, संग्रह प्रकरण, नृत्यशास्त्र की शिक्षा दी थी। वृषभसेन को गान्धर्वविद्या कि शिक्षा तथा आयुर्वेद, धनुर्वेद, अश्वलक्ष्ण, गजलक्षण, रत्नपरिक्षा एवं तन्त्र मन्त्र, कामनिती, स्त्री-पुरूष लक्षण की शिक्षा बाहुबली को दी गई थी १३।

अध्ययनीय वाङ्मय के अन्तर्गत व्याकरण शास्त्र, छन्दशास्त्र, अलंकार शास्त्र सिखाया जाता था। नवयुवकों को उक्त तीनों विषयों के अतिरिक्त ज्योतिष, आयुर्वेद, शस्त्रसंचालन एवं गज तथा अश्वसंचालन की शिक्षा दी जाती थी। आदिपुराण में चौदह विद्याएँ पाठयक्रम के अन्तर्गत बतलाई गयी है। उनकी नामावली इस प्रकार है, चार वेदों का अध्ययन, उच्चारण विधि का परिज्ञान, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष ग्रह, नक्षत्र, उनकी गति, स्थिती एवं अवस्थाओं की जानकारी, निरूक्त, शब्दों की ब्युत्पत्तियाँ, इतिहास, पुराण, मीमांसा - विधि या क्रियापतिपादक शास्त्र, न्याय शास्त्र, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य आदि सात पदार्थो का बोध कराया जाता था १४। गृहविरत मुनियों को पारलौकिक शिक्षा का प्रबन्ध किया जाता था।

विधी - इस युग में सम्पुर्ण शिक्षा मौखिक और स्मृति के आधार पर चलती थी इसलिए बात को चुने हुए शब्दों में सूत्र रूप में कहा जाता था। जिससे शिष्य उसे ज्यों का त्यों स्मरण रख सके। प्रारम्भिक साहित्य सूत्र रूप में मिलने का यही कारण था।

आदिपुराण में शिक्षा विधि के सात भेद वर्णित किये गए है।

१)पाठ-विधि-इस में गुरू विद्यार्थियों की काष्ठपट्टिका के उपर अंक या अक्षर लिख कर देते थे फिर विद्यार्थी उसका अनुकरण कर बार बार लिखकर उसे कंठस्थ करते थे। इससे उच्चारण की स्पष्टता, लेखनकला का अभ्यास, तर्कात्मिक संख्या प्रणाली से ज्ञान कराया जाता था १५।

२)प्रश्नोत्तर विधि - इस विधि में शिष्य प्रश्न करता था और गुरू समस्या पूर्ति एवं पहेली बुझाने की विधि से, चमत्कारिक एवं तर्कपूर्ण उत्तर देकर शास्त्रीय ज्ञान का संवर्धन करते थे। इस विधि के माध्यम से गुढ तथा दुरूह विषय को भी सरलतापूर्वक समझाया जाता था १६।

३)शास्त्रार्थ विधि - प्राचीनकाल में शास्त्रार्थ विधि द्वारा गुरू शिष्यों में उत्तर - प्रत्युत्तर देने की शक्ति का विकास करते थे। स्वपक्ष की सिद्धी तथा परपक्ष में दोष निकालना इस विधि का मुख्य उद्देश्य रहता था १७।

४)उपदेश विधि - इस विधि में गुरू द्वारा व्याख्यान के रूप में विषयों का प्रतिपादन कराते थे। प्रमुख विषयों के ग्रहण हेतु इस विधि का प्रयोग किया जाता था १८।

५)उपक्रम या उपोद्घात विधि - क्रम विशेष से पाठय का विवेचन कर उद्यीष्ट पदार्थ को शिष्य की बुद्धि में बैठा देना इस विधि का उद्यीष्ट होता था। (नाम, प्रमाण, अभिधेय,

अर्थाधिकार) इन भेदों द्वारा शिष्य को अच्छी तरह समझा देना उपक्रम विधि है १९।
६)पंचांग विधि - विद्यार्थियों में शिक्षा के उत्तरोत्तर विकास हेतु स्वाध्याय के पाँच अंगो द्वारा (वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय, उपदेश) विस्तृत विवेचन करना पंचांग विधि है २०।
७)श्रवण विधी - किसी भी तथ्य को सुनकर ग्रहण करना श्रवण विधि है २१।

इसके आलावा शिक्षार्थी की जिज्ञासा का समाधान गुरू द्वारा दिया जाता, तत्वार्थ-सूत्र में भी शिक्षा प्राप्त करने की दो विधियाँ बताई गयी है।

१)निसर्ग विधि और २) अधिगम विधि २२।

'निसर्ग' याने स्वभाव । जीवन के विकास क्रम में प्रज्ञावान व्यक्ति किसी गुरू अथवा शिक्षक के बीना स्वतः ही ज्ञान के विभिन्न विषयों को सिखता रहता है। सम्यक ज्ञान से सम्यक चारित्र्य को प्राप्त करता है।

अधिगम याने दूसरों के सिखाने अथवा उपदेश से पदार्थों का जो ज्ञान होता। इस विधि से सभी प्रकार के व्यक्ति तत्वज्ञान करते है। जो सम्यक् दर्शन का कारण बनता है।

जैन दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य -

सदाचार की वृद्धी, व्यक्तित्व का विकास, प्राचीन संस्कृति का रक्षण, तथा सामाजिक और धार्मिक कर्तव्य का शिक्षण यही उद्देश्य प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति का था ।

जैन दृष्टि से शिक्षा का उद्देश्य मानव व्यक्तित्व का समग्र विकास माना गया है। अर्थात अंतरंग एवं बाह्य सभी गुणोंका विकास है। व्यक्ति के चरम विकास की स्थिती को जैन दर्शन में मोक्ष कहा है। संपूर्णतः पूर्णत्व की ओर होने से उसे सिध्द कहा गया है। इससे पूर्व की स्थिती अरिहन्त की मानी गयी है। सम्यकदर्शन, सम्यकज्ञान तथा सम्यकचारित्र्य इन तीन कारणों को मिलकर साधक विकास साधा जाता है। इन तीनां के सम्मिलित रूप को ही मोक्ष का मार्ग कहा गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

१)डॉ.अ.स.अल्तेकर ''एडुकेशन इन एन्शिएंट इण्डिया''
२)गेरोला, वाचस्पती - ''संस्कृत साहित्य का इतिहास'', पृ. १७
३)वट्टेकर - मूलाचार, माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, बम्बई १९८०
४)पं.आशाधर-अणगार धर्मामृत, माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, बम्बई, १९१९.
५)पी.बी.देसाई - जैनिज्म इन साउथ इण्डिया, जीवराज जैन ग्रन्थमाला, सोलापूर १९५२.
६)उत्तराध्ययन सूत्र - ११/१४, पृ. ९९
७)डी.सी. दासगुप्त ''द जैन सिस्टम ऑफ एडुकेशन'', पृ. १२
८)भगवती सूत्र, शतक ९, उद्येशक ३३/३८०.
९)ज्ञाताधर्मकयांग सूत्र १/१/११५, पृ. ५६.
१०)भगवती सूत्र १२/१/४३७, १५/१/५३९.
११)राजप्रश्नीय सूत्र २६९, पृ. १९७
१२)ज्ञाताधर्मकयांग सूत्र १/१९९, पृ. ४८
१३)आदिपुराण १६/११८-१२५
१४)आदिपुराण २/४८
१५)डॉ. नेमीचंद शास्त्री, आदिपुराण में प्रतिपादित भारत पृ. २६७, २६८
१६)वही पृ. २६७, २६८
१७)वही पृ. २६८, २६९
१८)वही
१९)वही पृ. २६९
२०)वही पृ. २७०
२१)वही पृ. २७०
२२)पं. सुखलालजी संघवी, तत्वार्थसूत्र, ''तन्निसर्गादधिगमाद्वा'' १/३.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ Directory Of Research Journal Indexing
- ✶ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org